

ब्रह्म ज्ञान योग संस्थान बिसवाँ सीतापुर



----- सतज्ञान को जानें ---

* सतज्ञान क्या है? --

सत्यज्ञान को जानना, यही तो है सतज्ञान!
सत्य है केवल आत्मा, अंश जीव है मान!!

आत्मज्ञान, सतज्ञान है, जीव और जीवन ज्ञान!
सभी ज्ञान इस एक में, यही सार है ज्ञान!!

जीवन ज्ञान में चार हैं, मन बुद्धि, चित्त, अहंकार!
चारों स्थिर होय जब, तब जीवन हो सार!!

योग ध्यान तो सब करै, मन स्थिर न होय!
सत्यज्ञान यदि जान लो, चारों स्थिर होय!!

तन जब चले तो स्वस्थ हो, मन स्थिर तब स्वस्थ!
स्थिर बुद्धि ही सुमति है, बृत्ति निरोध हो चित्त!!

बृत्ति निरोध हो चित्त की, पातंजलि का सूत्र!

यही योग का लक्ष्य है, यही योग का सूत्र!!

चित्त की बृत्ति से मन बना, मन की बृत्ति से बुद्धि!

चित्त बृत्तियाँ शांत हो, स्थिर मन और बुद्धि!!

अहंकार को 'मैं' कहत, यह पद स्थिर होय!

जीवन तब ही सफल हो, जीव सुखी तब होय!!

योग से स्थिर होत नहिं, स्थिर सत्य से होय!

इसीलिए सतज्ञान है, परमज्ञान यह होय!!

• जीव को ज्ञान की आवश्यकता क्यों? - - - -

आवश्यकता क्या ज्ञान की, जब यह ईश्वर अंश !
दोनों आँखें बन्द है, प्राण रूप यह अंश !!

दो आँखें है जीव की, सत की और विवेक !
दोनों आँखें बन्द है, इसीलिए अविवेक !!

प्राणवायु यह जीव है, सार शब्द है आत्म !
परिवर्तन हो जीव का, बनना इसको आत्म !!

वायु रूप में जीव है, परमधार है आत्म !
परमधार जब जीव हो, दोनों हो एकात्म !!

संचालन मन कर रहा, है अंधा यह जीव !
संचालन हो आत्म से, जीव अवस्था पीव !!

संचालन मन का हटे, आत्म संचालित जीव !
मन और मैं से मुक्ति हो, परमधार हो जीव !!

दोनों आँखें भी खुले, सत की और विवेक !
भवसागर, चौरासी कटे, छूटे यह अविवेक !!

'DARK ENERGY' से मन बना, इसमें मानस रोग !
मन कौवा से हंस हो, नष्ट हो मानस रोग !!

'ENLIGHTENMENT' मन का हो, जीव का कायाकल्प !
जीव को आना केन्द्र पर, और नहीं है विकल्प !!

जीव विमुख है आत्म से, इसीलिए दुख द्वंद !
सन्मुख होवे आत्म के, सभी कटे भव फन्द !!

सुनो कहानी जीव की, जानों इसका भेद !
दोनों आँखें बन्द है, जानों आत्म अभेद !!

अंश आत्मा का यही, यहाँ बन गया जीव !
प्राणवायु का रूप है, तत्व बना है जीव !!

बिना तत्व की आत्मा, तत्व का मानव जीव !
मन के संग में रह रहा, मन संचालित जीव !!

प्राणवायु तो तत्व है, आत्म होय अतत्व !
तत्व से फिर है लौटना, बनना इसे अतत्व !!

जीव विमुख है आत्म से, सन्मुख होवे जीव !
परिधि से आना केन्द्र पर, यही लक्ष्य है जीव !!

अज्ञान, अविद्या, कुमति में, फँसा पड़ा है जीव !
सन्मुख यदि हो केन्द्र के, तुरत मुक्त हो जीव !!

योग ध्यान से मुक्ति नहि, जाने यह सतनाम !
जीव तुरत ही मुक्त हो, सन्मुख होवे आत्म !!

• सभी जीवों को केवल सतज्ञान या परमात्मा की ही आवश्यकता क्यों? ---

जीव की सभी आवश्यकताएं केवल सतज्ञान से ही पूर्ण हो सकती हैं , इसके अलावा कोई दूसरा विकल्प ही नहीं है !

• जीव की आवश्यकताएँ :---

दृष्टि विवेक की चाहिए , विद्या, सुमति ज्ञान !
मोक्ष, मुक्ति सब चाहिए , धुरपद और निर्वाण !!

विजय प्रकृति पर चाहिए, और जीतना काल !
माया से हो निकलना, भवसागर का जाल !!

सभी शरीरों से निकलना, सभी द्वार हो पार !
चक्र भी हो जागृत सभी, तत्व सभी हो पार !!

संचालन मन का हटे, जीव का काया कल्प !
मन कौवा से हंस हो, आत्म बनना लक्ष्य !

तन, मन, सुरत है पींजड़ा , जीव हो इनमें कैद !
भवसागर का जाल यह, कभी न छूटे कैद!

बन्दीखाना जीव के, तन, मन, सुरत है जान!
तीनों से है निकलना, “मैं पद” इसी को मान!

तीन ताप का असर नहिं, नष्ट हो मानस रोग!
भवसागर, चौरासी कटे, कभी न व्यापे शोक!!

अंतर्मुखी हो इंद्रियाँ, स्थिर मन, बुद्धि, चित्त!
स्थिर तीनों दृष्टि हो, बृत्ति निरोध हो चित्त!!

तन, मन, सुरत से होना अनन्य है, इन्हीं से होना है बैराग!
पूर्ण प्रयास रहित होना है, दृष्टि सहज आत्मघट जाग!!

सहज दृष्टि से पहुँचना, केन्द्र को आना जीव!
सन्मुख होना आत्म के, जीव को बनना पीव!!

एक अद्वैत को खोजना, यही सत्य का पंथ!
आत्म,परमात्म मिले, सभी कह गये ग्रंथ!!

चौथे लोक को खोजना, यही जीव का लक्ष्य!
सन्मुख होना दृष्टि से, आत्म हो प्रत्यक्ष!!

· भक्ति परमात्मा की धार की करे:---

भक्ति तो है गंगा की धार !

इसी धार को कृपा है कहते, धार प्रकट सत्संगी जान !

वही है सतगुरु, वही है सत्संग, वही धार है पद निर्वाण !

वही परमपद, वही अनामी, वही विदेही, वही सतज्ञान !

वही है भक्ति, वही समर्पण, वही अचलपद उसको जान !

वही है राधा, वही है स्वामी, वही है गुरुपद उसको जान !

सभी तरेंगे, सभी हो स्थिर, सभी पूर्ण हो, उसी को जान !

वही ज्ञान है, वही है विद्या, किलिया धुरी, केन्द्र है जान !

• सत्य को कैसे पहचाने :--

1. आदि, अनादि, अखण्ड हो, परिवर्तन से मुक्त !
तत्त्वों से भी पार हो, परमधार से युक्त !
सत्य है केवल आत्मा, दूजा नहीं है कोय !
यही विदेही परमपद, यही मुक्तपद होय !
2. अविनाशी है, अमर, अखंडित, परमतत्व है जानों !
नाम विदेही इसी को कहते, केवल इसी को जानों !
परमतत्व का परम मुक्तपद, निर्भय पद है जानों !
सबका मालिक एक यही है, सन्मुख है पहचानों !
3. मन, माया और तत्व रहित है, अलख इसी को जानो !
आशा, तृष्णा, देह रहित है, आत्म इसी को जानो !
रूप, रंग, आकर से न्यारा, गुणातीत है जानो !
ज्ञान, ध्यान, आधार, अगोचर, इससे न्यारा जानों !

गुरु रहित पद, क्रिया रहित पद, द्वैत, अद्वैत न जानों !
प्राणातीत, सहज, सन्मुखता, है अनन्य, तुम जानों !!

*** सत्य को कहाँ और कैसे खोजे ***

**1. वस्तु अगोचर खोजिये, पिंड, अंड के पार !
सार शब्द वहाँ हो रहा, वही सत्य है धार !!**

**वही राम है, वही नाम है, वही है सतगुरु और सतनाम !
वही विदेही, वही आत्मपद, वही है पूर्ण पद निर्वाण !!**

**वही मुक्तिपद, वही मोक्षपद, वही अचलपद उसको जान !
बन्दीछोर निःअक्षर है वह, वही परमपद उसको जान !!**

**2. जब तुम खोजो सत्य को, खोजो चौथा लोक !
तीन लोक है छोड़ना, जानों आत्म अलोक !!**

**तन, मन, सुरत है तीन पद, यही तीन है लोक !
तीन लोक में सत्य नहीं, यह माया के लोक !!**

**ध्यान, योग, जप, तप क्रिया, कर्म से सत्य है दूर !
अनहदनाद न स्वांस में, नहीं सत्य है नूर !!**

इन सब से होना अनन्य, सन्मुख होना आत्म !
सहज दृष्टि से खोजना, चौथा पद है आत्म !!

* “सार-भेद” सत्य खोजने का *

सत्य खोजने क्यों पड़ा, सद्गुरु खोजो जाय !
सत्य तुरत ही खुद मिले, धार प्रकट हो जाय !!

सुरेशा दयाल
ब्रम्हज्ञान योग संस्थान
मोचकला बिसवाँ सीतापुर
उ० प्र०

सम्पर्क सूत्र- 9984257903